जीवन में सम्यक ज्ञान जरूरी : आचार्य

आचार्य महाश्रमण के रामचंद सोहन सभागार में प्रवचन, सुबह किया गंगाशहर के लिए विहार

भास्कर न्यूज. सरदारशहर

आचार्य महाश्रमण ने शनिवार को संस्था के राममंच सोहन सभागार में कहा कि आदमी के जीवन में कुछ अच्छा करने की तमन्ना होनी चाहिए। हमारे जीवन में सम्यक ज्ञान आए। प्रवाह के साथ बहने वाले को सांसारिक और प्रवाह के विपरित बहने वाले को सन्यासी कहते हैं।

प्रवाह को परिभाषित करते हुए महाश्रमण ने कहा कि यह तो ऐश व आराम की जीवन जीवने का नाम है। एक सन्यासी को सांसारिक सुख-सुविधाओं का त्याग करना पड़ता है। भारत भूमि में ज्ञान का खजाना है और इस खजाने को जानने के लिए संस्कृत व पराकृत भाषा का ज्ञान होना जरूरी है। अनुवाद की भाषा को उन्होंने ऊपरी और सतही जानकारी बताते हुए कहा कि संस्कृत व पराकृत के ज्ञान बिना इस खजाने से साक्षात्कार करना संभव नहीं। गांधी विद्या मंदिर को ज्ञान का अराधना स्थल और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाले संस्था कहते हुए संस्था परिवार को जीवन में सच्चाई, सुचिता और ईमानदारी आने का आशीर्वाद दिया।

आईएएसई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आरएन शर्मा ने स्वागत उद्बोधन में आचार्य को सादगी, शांति और करूणा का प्रतीक बताते हुए उनके आशीर्वचनों को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया। संस्था अध्यक्ष कनकमल दूगड़ ने आभार व्यक्त करते हुए उनके गुरू आचार्य महाप्रज्ञ और संस्थापक स्वामी रामशरण के साझा साधना का स्मरण करवाया। साथ ही साथ वर्ष 1948 से ही आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा दूगड़ विद्यालय में नैतिक मूल्य की शिक्षा की ज्योति के क्रम को महाश्रमण द्वारा आगे बढ़ाने पर आभार व्यक्त किया।

सरदारशहर. सवाई छोटी में शनिवार को आयोजित धर्मसभा में उपस्थित श्रावक श्राविकाएं।

राष्ट्रदूत

चूरू, रविवार 15 दिसम्बर, 2013

शेखावाटी

व्यक्ति में चेतना का विकास जरूरी: आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर,14 दिसम्बर (कासं)। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महाश्रमण ने कहा कि हमारी दुनिया में 84 लाख योनिया बतायी गयी है, जिसमें अनन्य जीव बनाए गए हैं, जो कभी कम नहीं होते हैं। जिनमें सबसे अच्छा प्राणी आदमी है। वे शनिवार को सवाई छोटी में धर्मसभा को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि आदमी ही ऐसा प्राणी है जो साधना कर मौक्ष को प्राप्त कर सकता है। देवता स्वर्ग में रहते है लेकिन उनकों भी मौक्ष प्राप्त करने के लिए मनुष्य जीवन में आना होगा और साधना कर मौक्ष को प्राप्त करना होगा। केवल ज्ञान मनुष्य ही प्राप्त कर सकता है। विवेक शक्ति की दृष्टि से मनुष्य ही विकास कर रहा है, आदमी इन्द्रियों और उपकरणों के माध्यम से सुक्षम से सुक्षम देख लेता है।

मनुष्य सबसे श्रेष्ठ प्राणी भी है और सबसे खराब प्राणी भी है। सभा को सुमतिचंद गोठी, संजय दूगड, उर्मिला दूगड ने संबोधित करते हुए सभी संतों एवं उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं का आभार व्यक्त किया।

तेरापंथ धर्मसंघ के 11 वें आचार्य महाश्रमण ने शनिवार को संस्था के राममंच सोहन सभागार से अपने आशीर्वचन में कहा कि आदमी के जीवन में कुछ अच्छा करने की तमन्ना होनी चाहिए।

हमारे जीवन में सम्यक ज्ञान आए। प्रवाह के साथ बहने वाले को सांसारिक और प्रवाह के विपरित बहने वाले को सन्यासी कहते हैं। प्रवाह को परिभाषित करते हुए महाश्रमणजी ने कहा कि यह तो ऐश व आराम की जीवन जीवने का नाम है। भारत भूमि में ज्ञान का खजाना है और इस खजाने को जानने के लिए संस्कृत व पराकृत भाषा का ज्ञान होना जरूरी है। अंनुवाद की भाषा को उन्होंने ऊपरी और सतही जानकारी बताते हुए कहा कि संस्कृत व पराकृत के ज्ञान बिना इस खजाने से साक्षात्कार करना संभव नहीं। गांधी विद्या मंदिर को ज्ञान का अराधना स्थल और नैतिक मल्यों की प्रतिष्ठा को बढाने वाले संस्था कहते हुए संस्था परिवार को जीवन में सच्चाई, सुचिता और ईमानदारी आने का आशीर्वाद दिया।

सरदारशहर के कुबेर कॉटेज में आचार्य महाश्रमण से वार्ता करते महासभा मुख्य ट्रस्टी कमल दूगड व मूलचंद मालु। फोटो:- चन्द्रप्रकाश लाटा

- आचार्य के आशीर्वचनों को जीवन में आत्मसात करने का आव्हान किया
- छात्र-छात्राओं ने स्वामी जी से आशीर्वाद प्राप्त किया
- भारत भूमि ज्ञान का खजाना : महाश्रमण

आईएएसई विश्वविद्यालय के कुलपति डा. आरएन शर्मा ने स्वागत उद्बोधन में आचार्य को सादगी, शांति और करूणा का प्रतीक बताते हुए उनके आशीर्वचनों को जीवन में आत्मसात करने का आव्हान किया।

संस्थाध्यक्ष कनकमल दूगड ने महाश्रमणजी का आभार व्यक्त करते हुए उनके गुरू आचार्य महाप्रज्ञ और संस्थापक स्वामी रामशरण के साझा साधना का स्मरण करवाया। साथ ही साथ वर्ष 1948 से ही आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा दूगड विद्यालय में नैतिक मूल्य की शिक्षा की योति के क्रम को महाश्रमण द्वारा आगे बढाने पर आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के अंत में संस्था परिवार के सभी अधिकारियो व छात्र-छात्राओ ने स्वामी जी से आर्शीवाद प्राप्त किया।